अकृषीय उद्यमों की प्रमुख विशेषताएं

4.1 अकृषीय उद्यमों के अन्तर्गत स्वकार्य उद्यमों, संस्थाओं व प्रमुख कार्यकलाप वर्गो में कुल उद्यम, कार्यरत कुल व्यक्ति व महिलायें

4.1.1 आर्थिक गणना–2005 के परिणामों से विदित होता है कि प्रदेश के कुल 40.21 लाख उद्यमों में से अकृषीय उद्यमों की संख्या 37.63 लाख(93.6 प्रतिशत) थी, जो वर्ष 1998 की तुलना में 39.1 प्रतिशत अधिक रही । वर्ष 2005 में स्वकार्य उद्यमों तथा संस्थानों की संख्या क्रमशः 26.26 लाख(69.8 प्रतिशत) तथा 11.37 लाख(30.2 प्रतिशत) पायी गयी, जिसमें वर्ष 1998 की तुलना में क्रमशः 29.0 प्रतिशत तथा 70.0 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई ।(तालिका–एस–1)

4.1.2 रोजगार के आंकड़ों की विवेचना करने पर यह ज्ञात होता है कि प्रदेश के कुल 40.21 लाख अकृषीय उद्यमों में 76.24 लाख व्यक्ति कार्यरत थे, जिनमें से 33.84 लाख (44.4 प्रतिशत) स्वकार्य उद्यमों तथा 42.40 लाख(55.6 प्रतिशत) संस्थानों में कार्यरत पाये गये । कार्यरत कुल व्यक्तियों में वर्ष 1998 की तुलना में वर्ष 2005 में 13.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई । स्वकार्य उद्यमों में कार्यरत व्यक्तियों में 20.4 प्रतिशत वृद्धि का महत्वपूर्ण योगदान रहा जबकि संस्थानों में कार्यरत व्यक्तियों में 15.2 प्रतिशत की वृद्धि पायी गयी । (तालिका–एस–2)

विस्तृत विवेचना से यह भी विदित होता है कि कुल अकृषीय उद्यमों में कार्यरत महिलाओं का योगदान 6.99 लाख(9.2 प्रतिशत) था, जो वर्ष 1998 की तुलना में 17.7 प्रतिशत अधिक रहा । स्वकार्य उद्यमों में कार्यरत कुल व्यक्तियों में 2.41 लाख (7.1 प्रतिशत) महिलाएं तथा संस्थानों में कार्यरत कुल व्यक्तियों में 4.58 लाख (10.8 प्रतिशत) महिलायें कार्यरत पायी गयीं । कार्यरत महिलाओं की संख्या की दृष्टि से वर्ष 1998 में कुल 5.94 लाख महिलाएं स्वकार्य एवं संस्थानों में कार्यरत थीं । (तालिका–एस–3)

4.1.3 कुल अकृषीय उद्यमों में प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार फुटकर व्यापार के 20.4 लाख (54.2 प्रतिशत), लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें के 3.85 लाख(10.2 प्रतिशत), विनिर्माण के 8.19 लाख (21.8 प्रतिशत), जलपान गृह तथा होटल के 1.31 लाख(3.5 प्रतिशत), यातायात एवं भण्डारण के 0.6 लाख(1.6 प्रतिशत), वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें के 0.89 लाख(2.3 प्रतिशत), थोक व्यापार के 0. 67 लाख(1.8 प्रतिशत), डाक एवं संचार के 0.73 लाख(1.9 प्रतिशत), निर्माण के 0.16 लाख(0.4 प्रतिशत) तथा खनन एवं उत्खनन के 0.11(0.3 प्रतिशत) उद्यमों का योगदान रहा, जिनमें क्रमशः 30.32 लाख (39.8 प्रतिशत), 9.79 लाख(12.8 प्रतिशत), 22.52 लाख(29.5 प्रतिशत), 2.42 लाख (3.2 प्रतिशत), 1.13 लाख (1.5 प्रतिशत), 2.43 लाख (3.2 प्रतिशत), 1.37 लाख (1.8 प्रतिशत), 1.14 लाख(1.5 प्रतिशत), 0.24 लाख(0.3 प्रतिशत) एवं 0.29(0.4 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत थे, जबकि अन्य कार्यकलाप, विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में उद्यमों की संख्या व उनमें कार्यरत व्यक्तियों की संख्या नगण्य रही ।(तालिका–एस–4)

4.2 प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार स्वकार्य उद्यमों/संस्थानों का वितरण तथा उनमें कार्यरत व्यक्ति

4.2.1 कार्यकलाप वर्गानुसार अकृषीय स्वकार्य उद्यमों की संख्या में 86.9 प्रतिशत अंश प्रमुखतया फुटकर व्यापार 15.68 लाख(59.7 प्रतिशत), विनिर्माण 5.29 लाख(20.8 प्रतिशत) लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें 1.84 लाख (7.1 प्रतिशत) का रहा, जिसके अन्तर्गत वर्ष 1998 की तुलना में फुटकर व्यापार एवं विनिर्माण में क्रमशः 48.3 प्रतिशत एवं 29.0 प्रतिशत की वृद्धि तथा लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 50.3 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई । समग्र रूप से खनन तथा उत्खनन, विद्युत, गैस तथा जल आपूर्ति तथा अन्य कार्यकलाप का नगण्य योगदान पाया गया ।

4.2.2 अकृषीय स्वकार्य उद्यमों की वर्ष 1998 से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2005 में खनन तथा उत्खनन, निर्माण, थोक व्यापार, फुटकर व्यापार, जलपान गृह तथा होटल, विनिर्माण,

डाक एवं संचार, वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें, विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति व अन्य कार्यकलाप वर्गो में वृद्धि हुई, जबकि यातायात एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में किंचित कमी परिलक्षित हुई । वर्ष 2005 में सर्वाधिक वृद्धि खनन एवं उत्खनन क्षेत्र में 1178.79 प्रतिशत, विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति क्षेत्र में 579.31 प्रतिशत तथा डाक एवं संचार क्षेत्र में 405.29 प्रतिशत पायी गयी । इसके अतिरिक्त वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति एवं व्यवसायिक सेवाएं में 95.42 प्रतिशत एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें तथा यातायात क्षेत्र में क्रमशः 73.55 एवं 22.54 प्रतिशत की अपेक्षाकृत कमी परिलक्षित हुई ।

4.2.3 अकृषीय स्वकार्य उद्यमों में 33.84 लाख(44.4 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत थे, जो वर्ष 1998 की तुलना में 7.80 प्रतिशत अधिक रहे । इनमें 2.42 लाख(9.2 प्रतिशत) महिलाओं का योगदान पाया गया । प्रमुख कार्यकलाप वर्गो में रोजगार क्षेत्र की आन्तरिक विवेचना से ज्ञात होता है कि फुटकर व्यापार में सर्वाधिक व्यक्ति 18.82 लाख(55.6 प्रतिशत) तदुपरान्त विनिर्माण में 8.34 लाख(24.6 प्रतिशत), लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 2.36 लाख(7.0 प्रतिशत) एवं जलपान गृह तथा होटल में 1.22 लाख(3.6 प्रतिशत) कार्यरत थे, जिनमें वर्ष 1998 की तुलना में खनन एवं उत्खनन में 1341.9 प्रतिशत, डाक एवं संचार में 301.3 प्रतिशत, विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति में 110.7 प्रतिशत, वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें में 73.3, थोक व्यापार में 29.8 प्रतिशत, फुटकर व्यापार में 29. 0 प्रतिशत, जलपान गृह एवं होटल में 6.9 प्रतिशत एवं विनिर्माण में 0.15 प्रतिशत की वृद्धि एवं निर्माण, यातायात एवं भण्डारण, लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें व अन्य में क्रमशः 13.2, 25.4, 58.6 एवं 59.5 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई ।

4.2.4 कार्यकलाप वर्गानुसार विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि अकृषीय संस्थानों की संख्या में 82.6 प्रतिशत अंश फुटकर व्यापार(41.5 प्रतिशत), विनिर्माण(25.5 प्रतिशत) एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें(15.6 प्रतिशत) का रहा, जिसके अन्तर्गत वर्ष 1998 की तुलना में क्रमशः 128.27 प्रतिशत, 60.5 प्रतिशत की वृद्धि एवं 28.1 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई, जबकि विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति, निर्माण, खनन तथा उत्खनन, एवं वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें एवं अन्य कार्यकलाप वर्ग में नगण्य संस्थान स्थित थे ।

4.2.5 अकृषीय संस्थानों की वर्ष 1998 से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2005 में विनिर्माण, निर्माण, फुटकर व्यापार, यातायात एवं भण्डारण, डाक एवं संचार, खनन व उत्खनन, विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति, जलपान गृह एवं होटल में वृद्धि हुई, जबकि लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में कमी परिलक्षित हुई । वर्ष 2005 में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि फुटकर व्यापार 143.3 प्रतिशत, विनिर्माण सेवाओं में 66.7 प्रतिशत, थोक व्यापार में 65.8 प्रतिशत पायी गयी । इसके अतिरिक्त लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 8.3 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हुई ।

4.2.6 अकृषीय संस्थानों में 42.4 लाख(55.6 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत थे, जो वर्ष 1998 की तुलना में 13.2 प्रतिशत अधिक रहे, इनमें 4.58 लाख(13.2 प्रतिशत) महिलाओं का योगदान पाया गया । प्रमुख कार्यकलाप वर्गो में रोजगार क्षेत्र की आन्तरिक विवेचना से ज्ञात होता है कि अपेक्षाकृत अधिक व्यक्ति विनिर्माण में 14.18 लाख(33.4 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 11.5 लाख(27.1 प्रतिशत), लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 10.43 लाख(24.6 प्रतिशत) कार्यरत थे ।

वर्ष 2005 में रोजगार क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वाधिक वृद्धि विनिर्माण में हुई जो 33.4 प्रतिशत थी, तदुपरान्त फुटकर व्यापार में 27.1 प्रतिशत एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 17.7 प्रतिशत वृद्धि पायी गयी, जबकि सर्वाधिक कमी निर्माण क्षेत्र में 99.8 प्रतिशत परिलक्षित हुई । (तालिका–एस–3)

4.3 अकृषीय स्वकार्य उद्यमों/संस्थानों का प्रमुख कार्यकलापों के अन्तर्गत अन्तर्जनपदीय तुलनात्मक अध्ययन

4.3.1 प्रदेश के कुल स्वकार्य उद्यमों का विभिन्न कार्यकलाप वर्गवार जनपदीय विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि खनन तथा उत्खनन के क्षेत्र में स्थित 7174 उद्यमों में से 24 जनपदों में औसत 102 से अधिक उद्यम स्थित थे, जिनमें जनपद गाजियाबाद में सर्वाधिक 614(8.6 प्रतिशत) उद्यम थे, तदुपरान्त सीतापुर में 553(7.7 प्रतिशत) व बुलन्दशहर में 299 (4.2 प्रतिशत) उद्यम पाये गये ।

विनिर्माण क्षेत्र के 5.29 लाख उद्यमों में से 28 जनपदों में औसत 7552 से अधिक उद्यम थे, जिनमें जनपद वाराणसी में सर्वाधिक 28400(5.4 प्रतिशत), मऊ में 19732 (3.7 प्रतिशत) व बरेली में 17927(3.4 प्रतिशत) उद्यम स्थित थे । इसके विपरीत न्यूनतम उद्यम जनपद चित्रकूट में 2175(0.4 प्रतिशत), श्रावस्ती में 2306(0.4 प्रतिशत) व कौशाम्बी में 2406(0.5 प्रतिशत) उद्यम स्थित पाये गये ।

विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में स्थित 1576 उद्यमों में जनपद इलाहाबाद 398(25.2 प्रतिशत), फतेहपुर 111(7.0 प्रतिशत) व कन्नौज 100(6.3 प्रतिशत) उद्यमों के साथ प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहे । 53 जनपदों में औसत 23 से कम उद्यम पाये गये ।

निर्माण क्षेत्र के अन्तर्गत स्थित 12786 उद्यमों में 21 जनपदों में औसत 183 से अधिक उद्यम थे । इनमें जनपद लखनऊ, पीलीभीत व गोरखपुर में क्रमशः 1151 (9.0 प्रतिशत), 880(6.9 प्रतिशत) व 685(5.4 प्रतिशत) उद्यम पाये गये ।

थोक व्यापार के क्षेत्र में स्थित 40357 उद्यमों में से 24 जनपदों में औसत 577 से अधिक उद्यम थे, जिनमें जनपद कानपुर नगर में 4327(10.7 प्रतिशत), बुलन्दशहर में 2255(5.6 प्रतिशत) व मथुरा में 2080(5.2 प्रतिशत) उद्यम पाये गये । इसके विपरीत 7 जनपदों यथा हमीरपुर, महोबा, चित्रकूट, फतेहपुर, कौशाम्बी, बलरामपुर एवं सतं रविदास नगर में 100 से कम उद्यम पाये गये ।

फुटकर व्यापार क्षेत्र में स्थित 1568029 उद्यमों में से 29 जनपदों में औसत 22400 से अधिक उद्यम कार्यशील थे, जिनमें जनपद लखनऊ में सर्वाधिक उद्यम 61752 (3.9 प्रतिशत), कानपुर नगर में 49634(3.2 प्रतिशत) व गोरखपुर में 46270(3.0 प्रतिशत) स्थित थे । इसके विपरीत संत रविदास नगर में न्यूनतम उद्यम 5265(0.3 प्रतिशत), श्रावस्ती में 7318(0.5 प्रतिशत) व चित्रकूट में 8096(0.5 प्रतिशत) व संत कबीर नगर में 8961 (0.6 प्रतिशत) सबसे कम उद्यम पाये गये ।

जलपान गृह तथा होटल में स्थित 91109 उद्यमों में से 28 जनपदों में औसत 1302 से अधिक उद्यम कार्यरत थे, जिनमें जौनपुर में 4150(4.6 प्रतिशत), लखनऊ में 4008(4.4 प्रतिशत) व महराजगंज में 3863(4.2 प्रतिशत) उद्यम स्थित थे, जो प्रदेश के अन्य जनपदों में स्थित उद्यमों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक थे । इसके विपरीत जनपद चित्रकूट में 87(0.1 प्रतिशत), कानपुर देहात में 97 (0.1 प्रतिशत) व हमीरपुर में मात्र 168 (0.2 प्रतिशत) ही उद्यम थे ।

यातायात एवं भण्डारण क्षेत्र में स्थित 44029 उद्यमों में मात्र 23 जनपदों में औसत 629 से अधिक उद्यम पाये गये, जिनमें जनपद बरेली में सर्वाधिक उद्यम 4379 (9.9 प्रतिशत), लखनऊ में 2922(6.6 प्रतिशत) व मेरठ में 2185(5.0 प्रतिशत) पाये गये, जबकि कानपुर देहात में 22, चित्रकूट में 23 व संत रविदास नगर में केवल 62 उद्यम ही स्थित थे ।

डाक एवं संचार क्षेत्र के 54960 उद्यमों में से 23 जनपदों में औसत 785 से अधिक उद्यम थे, जिनमें जनपद गाजियाबाद में सर्वाधिक 2992(5.4 प्रतिशत) उद्यम कार्यशील रहे, जबकि कानपुर नगर 2735(5.0 प्रतिशत) तथा लखनऊ 2582(4.7 प्रतिशत) उद्यमों के साथ क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे ।

वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवाओं में स्थित 53883 उद्यमों के अन्तर्गत 27 जनपदों में औसत 770 से अधिक उद्यम कार्यशील पाये गये, जिनमें सर्वाधिक उद्यम जनपद गाजियाबाद में 3808(7.6 प्रतिशत), लखनऊ में 3687(6.8 प्रतिशत) व कानपुर नगर में 2704(5.0 प्रतिशत) उद्यम स्थित थे । इसके विपरीत न्यूनतम संख्या में उद्यम जनपद चित्रकूट में 133, बांदा में 134 व श्रावस्ती में 144 कार्यशील रहे ।

लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में कुल 184183 लाख उद्यम कार्यशील थे, जिनका जनपदवार तुलनात्मक विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि प्रदेश के 26 जिलों में औसत 2631 से अधिक उद्यम स्थित

थे । सर्वाधिक उद्यम जनपद लखनऊ में 9665(5.3 प्रतिशत), गाजियाबाद में 6672 (3.6 प्रतिशत) एवं मेरठ में 5688(3.1 प्रतिशत) उद्यम कार्यशील रहे । इसके विपरीत न्यूनतम संख्या के उद्यमों का योगदान जनपद संत रविदास नगर(487), श्रावस्ती(517) एवं चित्रकूट(549) का रहा ।(तालिका–एस–3)

4.3.2 प्रदेश के अकृषीय संस्थानों का विभिन्न कार्यकलाप वर्गवार जनपदीय विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि खनन तथा उत्खनन के क्षेत्र में स्थित कुल 4093 संस्थानों में से 21 जनपदों में औसत 58 से अधिक संस्थान थे, जिनमें जनपद गाजियाबाद में सर्वाधिक 392 (9.6 प्रतिशत), सहारनपुर में 240(5.9 प्रतिशत) एवं बरेली में 206(5.0 प्रतिशत) संस्थान पाये गये ।

विनिर्माण क्षेत्र के 290444 संस्थानों में से 23 जनपदों में औसत 4149 से अधिक संस्थान थे, जिनमें जनपद सहारनपुर में सर्वाधिक 16433(5.7 प्रतिशत), वाराणसी में 15726(5.4 प्रतिशत) व कानपुर नगर में 14949(5.1 प्रतिशत) संस्थान स्थित थें, जबकि जनपद चित्रकूट, कौशाम्बी एवं श्रावस्ती में संस्थानों की संख्या नगण्य पायी गयी ।

विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में स्थित 2002 संस्थानों में 19 जनपदों में औसत 29 से अधिक संस्थान स्थित थे, जिनमें से जनपद इलाहाबाद में 208(10.4 प्रतिशत), लखनऊमें 147(7.3 प्रतिशत), सीतापुर में 139(6.9 प्रतिशत) एवं वाराणसी में 113 (5.6 प्रतिशत) संस्थान पाये गये ।

निर्माण क्षेत्र के अन्तर्गत स्थित 3652 संस्थानों में से 19 जनपदों में औसत 52 से अधिक संस्थान रहे, जिनमें से गाजियाबाद में सर्वाधिक संस्थान 360(9.9 प्रतिशत), इलाहाबाद में 340(9.3 प्रतिशत) व सहारनपुर में 266(7.3 प्रतिशत) स्थित थे ।

थोक व्यापार क्षेत्र में स्थित 27587 संस्थानों में से 19 जनपदों में औसत 394 से अधिक संस्थान रहे । जनपद कानपुर नगर में सर्वाधिक 5635(20.4 प्रतिशत), गाजियाबाद में 1872(6.8 प्रतिशत) व आगरा में 1454(5.3 प्रतिशत) संस्थान स्थित पाये गये, जबकि जनपद चित्रकूट, कौशाम्बी एवं श्रावस्ती में 20 से कम संस्थान थे ।

फुटकर व्यापार क्षेत्र में 472166 संस्थान स्थित थे, जिनमें से 21 जनपदों में औसत 6745 से अधिक संस्थान पाये गये । जनपद लखनऊ में सर्वाधिक 24543 (5.2 प्रतिशत) संस्थान कार्यशील थे, जबकि कानपुर नगर में 20140(4.3 प्रतिशत) व सहारनपुर में 18866(4.0 प्रतिशत) संस्थान पाये गये । इसके विपरीत जनपद चित्रकूट में 569(0.1 प्रतिशत), श्रावस्ती में 853(0.2 प्रतिशत) व महोबा में मात्र 916(0.2 प्रतिशत) संस्थानों का योगदान रहा ।

जलपान गृह तथा होटल के क्षेत्र में 40259 संस्थानों में से 24 जनपदों में औसत 575 से अधिक संस्थान स्थित थे । जनपद लखनऊ में 3607(9.0 प्रतिशत), कानपुर नगर में 2202(5.5 प्रतिशत) एवं गोरखपुर में 2042(5.1 प्रतिशत) संस्थान स्थित पाये गये, जबकि जनपद चित्रकूट में 20, कौशाम्बी में 48 एवं कन्नौज में 49 संस्थान कार्यशील थे, जिनमें क्रमशः 0.0, 0.1 एवं 0.1 प्रतिशत का योगदान रहा ।

यातायात एवं भण्डारण क्षेत्र में स्थित 15770 संस्थानों में से 23 जनपदों में औसत 225 से अधिक संस्थान पाये गये, जिनमें सर्वाधिक योगदान जनपद फिरोजाबाद का 1181(7.5 प्रतिशत) तदुपरान्त गाजियाबाद का 985(6.2 प्रतिशत) एवं कानपुर नगर का 923 (5.8 प्रतिशत) रहा । इसके विपरीत न्यूनतम संस्थान श्रावस्ती में 9(0.1 प्रतिशत), चित्रकूट एवं कौशाम्बी में 10–10(0.1 प्रतिशत) पाये गये ।

डाक एवं संचार के क्षेत्र में स्थित 17734 संस्थानों में से 21 जनपदों में औसत 253 से अधिक संस्थान स्थित थे । संस्थानों की संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक योगदान जनपद सहारनपुर 1015(5.7 प्रतिशत), इलाहाबाद 902(5.1 प्रतिशत) व गाजियाबाद 896(5.0 प्रतिशत) रहा । इसके विपरीत न्यूनतम योगदान कौशाम्बी 16(0.1 प्रतिशत), श्रावस्ती 27(0.1 प्रतिशत) व चित्रकूट 43(0.2 प्रतिशत) का रहा ।

वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवाओं के अन्तर्गत स्थित 34726 संस्थानों में से 17 जनपदों में औसत 496 से अधिक संस्थान स्थित थे, जिनमें मुख्य योगदान जनपद लखनऊ 2980(8.6 प्रतिशत), गाजियाबाद 2166(6.2 प्रतिशत) व कानपुर नगर 1978(5.7 प्रतिशत) का रहा, जबकि न्यूनतम संस्थान जनपद कौशाम्बी एवं श्रावस्ती में 35–35(0.1 प्रतिशत), चित्रकूट में 50(0.1 प्रतिशत) व सिद्धार्थ नगर में 69(0.2 प्रतिशत) स्थित थे ।

लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें के अन्तर्गत कुल 200353 संस्थानों में से 26 जनपदों में औसत 2862 से अधिक संस्थान स्थित थे । संख्या की दृष्टि से जनपद लखनऊ 10089(5.0 प्रतिशत) प्रथम, कानपुर नगर 8258(4.7 प्रतिशत) द्वितीय व इलाहाबाद 6738(3.4 प्रतिशत) संस्थानों के साथ तृतीय स्थान पर रहे, जबकि जनपद श्रावस्ती 184(0.1 प्रतिशत), कौशाम्बी 337(0.2 प्रतिशत) व बलरामपुर में 948(0. 5 प्रतिशत) संस्थान स्थित थे ।(तालिका–एस–4)

4.4 स्वकार्य उद्यमों व संस्थानों में समस्त कार्यकलापों का क्षेत्रवार व जनपदवार वितरण

4.4.1 प्रदेश के कुल 26.26 लाख अकृषीय स्वकार्य उद्यमों में 15.05 लाख(57.3 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्र एवं 11.21 लाख(42.7 प्रतिशत) नगरीय क्षेत्र में स्थित थे । जनपदवार तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में सर्वाधिक उद्यमों की संख्या जनपद जौनपुर में 0.5 लाख(3.3 प्रतिशत), गोरखपुर में 0.45 लाख(3.0 प्रतिशत) व गाजीपुर में 0.44 लाख(2.9 प्रतिशत) पायी गयी । इसके विपरीत सबसे कम उद्यम जनपद कन्नौज में 5980(0.4 प्रतिशत), संत रविदास नरग में 7241(0.5 प्रतिशत) तथा मैनपुरी में 7736 (0.5 प्रतिशत) स्थित थे ।

नगरीय क्षेत्र में सर्वाधिक उद्यम जनपद लखनऊ में 0.78 लाख(6.9 प्रतिशत), कानपुर नगर में 0.64 लाख(5.7 प्रतिशत) तथा जनपद गाजियाबाद में 0.52 लाख (4.6 प्रतिशत) स्थित पाये गये । इसके विपरीत जनपद श्रावस्ती, कानपुर देहात, बस्ती, सिद्धार्थ नगर एवं चित्रकूट में स्वकार्य उद्यमों का नगण्य योगदान रहा ।

प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र(ग्रामीण व नगरीय) में अकृषीय स्वकार्य उद्यमों में सर्वाधिक उद्यम जनपद वाराणसी में 1.25 लाख(8.3 प्रतिशत), लखनऊ में 1.17 लाख (7.8 प्रतिशत) तथा कानपुर नगर में 0.97 लाख(6.4 प्रतिशत) पाये गये, जबकि न्यूनतम उद्यम जनपद चित्रकूट में 14486(0.9 प्रतिशत), श्रावस्ती में 14725(1.0 प्रतिशत) व बांदा में 16562(1.1 प्रतिशत) स्थित थे ।

4.4.2 प्रदेश के कुल 11.38 लाख अकृषीय संस्थानों में 4.69 लाख(41.2 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्र एवं 6.69 लाख(58.8 प्रतिशत) नगरीय क्षेत्र में स्थित थे ।

जनपदवार तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के कुल 4.69 लाख अकृषीय संस्थानों में सर्वाधिक संस्थान जनपद इलाहाबाद में 16885 (3.6 प्रतिशत), गोरखपुर में 16676(3.6 प्रतिशत) तथा हरदोई में 16421(3.5 प्रतिशत) स्थित थे, जबकि सबसे कम संस्थान जनपद कौशाम्बी में 946(0.2 प्रतिशत), महोबा में 1808 (0.4 प्रतिशत) व चित्रकूट में 1894(0.4 प्रतिशत) स्थित थे ।

नगरीय क्षेत्र के कुल 6.69 लाख अकृषीय संस्थानों का जनपदवार तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक संस्थान जनपद कानपुर नगर में 0.51 लाख (7.6 प्रतिशत), लखनऊ में 0.5 लाख(7.5 प्रतिशत) व वाराणसी में 0.30 लाख (4.5 प्रतिशत) स्थित थे, जबकि जनपद श्रावस्ती, चित्रकूट व कौशाम्बी में नगण्य संस्थान पाये गये ।

प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र(ग्रामीण व नगरीय) के कुल 11.38 लाख अकृषीय संस्थानों में सर्वाधिक संस्थान जनपद कानपुर नगर में 57198(5.0 प्रतिशत), लखनऊ में 57170(5.0 प्रतिशत) व सहारनपुर में 47328(4.2 प्रतिशत) स्थित थे । इसके विपरीत सबसे कम संस्थान जनपद कौशाम्बी में 1768(0.2 प्रतिशत), चित्रकूट में 2526(0.2 प्रतिशत) व महोबा में 3468(0.3 प्रतिशत) पाये गये ।

4.4.3 प्रदेश के कुल 37.63 लाख अकृषीय उद्यमों में से 19.73 लाख(52.4 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्र एवं 17.9 लाख(47.6 प्रतिशत) नगरीय क्षेत्र में स्थित पाये गये ।

जनपदवार तुलनात्मक अध्ययन करने पर विदित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के कुल 19.73 लाख अकृषीय उद्यमों में से सर्वाधिक उद्यम जनपद गोरखपुर में 0.62 लाख (3.1 प्रतिशत), इलाहाबाद में 0.6 लाख(3.0 प्रतिशत) तथा जौनपुर में 0.6लाख(3.0 प्रतिशत) स्थित थे, जबकि सबसे कम उद्यम जनपद कन्नौज में 8102(0.4 प्रतिशत), चित्रकूट में 9643 (0.5 प्रतिशत) व श्रावस्ती में 10371(0.5 प्रतिशत) स्थित थे ।

नगरीय क्षेत्र के कुल 17.9 लाख अकृषीय उद्यमों में से सर्वाधिक उद्यम जनपद लखनऊ में 1.28 लाख(7.2 प्रतिशत), कानपुर नगर में 1.16 लाख(6.5 प्रतिशत) व गाजियाबाद में

0.87 लाख(4.9 प्रतिशत) स्थित थे, जबकि जनपद श्रावस्ती, चित्रकूट व कौशाम्बी में उद्यमों की संख्या नगण्य रही ।

प्रदेश के विभिन्न जनपदों के अन्तर्गत संयुक्त क्षेत्र(ग्रामीण व नगरीय) में स्थित कुल 37.63 लाख अकृषीय उद्यमों में से सर्वाधिक उद्यम जनपद लखनऊ में 1.56 लाख(4.1 प्रतिशत), कानपुर नगर में 1.4 लाख(3.7 प्रतिशत) व गाजियाबाद में 1.15 लाख (3.1 प्रतिशत) पाये गये, जबकि सबसे कम उद्यम जनपद श्रावस्ती में 12713(0.3 प्रतिशत), चित्रकूट में 13988(0.4 प्रतिशत) व कौशाम्बी में 15815(0.4 प्रतिशत) पाये गये । (तालिका–एस–7)

4.5 अकृषीय संस्थानों में भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों का अंशदान

4.5.1 प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार

4.5.1.1 भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों की विवेचना करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2005 में अकृषीय संस्थानों में कार्यरत कुल 42.4 लाख कर्मकरों में से 32.94 लाख(77.7 प्रतिशत) कर्मकर भाड़े पर कार्यरत थे, जो वर्ष 1998 की तुलना में 6.6 प्रतिशत अधिक है । प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार विवेचना करने पर विदित होता है कि भाड़े पर कार्यरत कुल कर्मकरों का 85.5 प्रतिशत अंश मुख्यतः विनिर्माण में 11.14 लाख(33.8 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 7.48 लाख(22.7 प्रतिशत) तथा लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 9.54 लाख(29.0 प्रतिशत) पाया गया, जबकि निर्माण, विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति क्षेत्र में भाड़े के कर्मकरों का नगण्य योगदान रहा । (तालिका–एस–4)

4.5.1.2 विस्तृत विश्लेषण से विदित होता है कि वर्ष 1998 की तुलना में वर्ष 2005 में लगभग समस्त कार्य–कलाप वर्गो में वृद्धि पायी गयी । सर्वाधिक प्रतिशत वृद्धि फुटकर व्यापार में 851.5 प्रतिशत, थोक व्यापार में 543.6 प्रतिशत, जलपान गृह एवं होटल में 532.5 प्रतिशत पायी गयी ।(तालिका–एस–4)

4.5.2 अकृषीय संस्थानों में भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों का जनपदवार विवरण

4.5.2.1 अकृषीय संस्थानों में भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों की विवेचना से ज्ञात होता है कि कुल 32. 94 लाख व्यक्तियों में से 13.37 लाख(40.6 प्रतिशत) व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्र में एवं 19.57 लाख(59.4 प्रतिशत) व्यक्ति नगरीय क्षेत्र में थे ।

4.5.2.2 ग्रामीण क्षेत्र के अकृषीय संस्थानों में कार्यशील भाड़े के कर्मकरों की सर्वाधिक संख्या जनपद सहारनपुर में 0.50 लाख(3.7 प्रतिशत), इलाहाबाद में 0.46 लाख(3.4 प्रतिशत) तथा जौनपुर में 0.39 लाख(2.9 प्रतिशत) पायी गयी । इस के विपरीत सबसे कम कर्मकर जनपद श्रावस्ती में 2409(0.2 प्रतिशत), कौशाम्बी में 2420(0.2 प्रतिशत) तथा महोबा में 4160(0.3 प्रतिशत) पाये गये ।

4.5.2.3 नगरीय क्षेत्र के अकृषीय संस्थानों में भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों की सर्वाधिक संख्या जनपद गौतमबुद्ध नगर में 2.13 लाख(10.9 प्रतिशत), कानपुर नगर में 1.98 लाख (10.1 प्रतिशत), लखनऊ में 1.87 लाख(9.6 प्रतिशत), गाजियाबाद में 1.05 लाख (5.4 प्रतिशत) तथा मेरठ में 0.65 लाख(3.3 प्रतिशत) पायी गयी । इसके विपरीत जनपद श्रावस्ती, कौशाम्बी व सिद्धार्थ नगर में भाड़े पर कार्यरत कर्मकरों की संख्या नगण्य पायी गयी ।

4.5.2.4 प्रदेश के विभिन्न जनपदों में संयुक्त क्षेत्र(ग्रामीण व नगरीय) में स्थित अकृषीय संस्थानों में भाड़े पर कार्यशील कर्मकरों के आधार पर सर्वाधिक व्यक्ति जनपद गौतमबुद्ध नगर में 2.45 लाख(7.4 प्रतिशत), कानपुर नगर में 2.16 लाख(6.6 प्रतिशत), लखनऊ में 2.08 लाख(6.3 प्रतिशत) तथा इलाहाबाद में 1.08 लाख(3.3 प्रतिशत) कार्यरत थे, जबकि श्रावस्ती, कौशाम्बी व चित्रकूट में भाड़े के कर्मकरों की संख्या नगण्य पायी गयी । (तालिका–एस–7)

4.6 महिला/बाल श्रमिकों का रोजगार में अंशदान

4.6.1 प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार स्वकार्य उद्यमों/संस्थानों के अन्तर्गत महिला/बाल श्रमिकों का अंशदान

4.6.1.1 प्रदेश में स्थित कुल 26.26 लाख अकृषीय स्वकार्य उद्यमों में कार्यरत कुल 33.83 लाख व्यक्तियों में 2.42 लाख(7.1 प्रतिशत) महिलाओं एवं 0.68 लाख(2.0 प्रतिशत) बाल श्रमिकों का योगदान पाया गया । प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार कुल कार्यरत महिलाओं का 93.3 प्रतिशत

अंशदान प्रमुखतया विनिर्माण में 1.14 लाख(47.1 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 0.98 लाख(40.5 प्रतिशत) तथा लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.14 लाख(5.7 प्रतिशत) रहा, जबकि विद्युत, गैस तथा जल आपूर्ति, निर्माण एवं खनन एवं उत्खनन का योगदान नगण्य रहा ।

कुल कार्यरत बाल श्रमिको का 91.0 प्रतिशत अंशदान मुख्यतः विनिर्माण में 0.30 लाख(44.3 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 0.28 लाख(41.9 प्रतिशत) व जलपाल गृह एवं होटल में 0. 32 लाख(4.8 प्रतिशत) पाया गया, जबकि खनन तथा उत्खनन, विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति, निर्माण, यातायात एवं भण्डारण व डाक एवं संचार में नगण्य योगदान रहा।(तालिका–एस–3)

4.6.1.2 प्रदेश में स्थित कुल 11.38 लाख अकृषीय संस्थानों में 42.4 लाख व्यक्ति कार्यरत थे, जिनमें 4.58 लाख(10.8 प्रतिशत) महिलाओं एवं 1.12 लाख(2.6 प्रतिशत) बाल श्रमिकों का योगदान रहा । प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि कार्यरत कुल महिला कर्मकरों का 92.2 प्रतिशत अंशदान प्रमुखतया लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 1.88 लाख (41.0 प्रतिशत), विनिर्माण में 1.60 लाख(35.0 प्रतिशत) व फुटकर व्यापार में 0.74 लाख (16.2 प्रतिशत) रहा । सबसे कम योगदान निर्माण का 531(0.1 प्रतिशत), विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति 617(0.1 प्रतिशत) व खनन तथा उत्खनन क्षेत्र का 2622(0.6 प्रतिशत) रहा ।

कुल कार्यरत बाल श्रमिकों का 84.4 प्रतिशत अंशदान मुख्यतः विनिर्माण में 0.44 लाख(39.2 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 0.43 लाख(38.4 प्रतिशत) व लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.08 लाख(6.8 प्रतिशत) रहा । इसके विपरीत विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति, निर्माण व खनन एवं उत्खनन में बाल श्रमिकों का नगण्य योगदान पाया गया ।(तालिका–एस–4)

4.6.1.3 भाड़े पर कार्यरत कुल 32.94 लाख कर्मकरों में 4.21 लाख(12.8 प्रतिशत) महिलाओं तथा 1.02 लाख(3.1 प्रतिशत) बाल श्रमिकों का योगदान रहा । प्रमुख कार्यकलाप वर्गानुसार विश्लेषण करने पर विदित होता है कि भाड़े पर कार्यरत कुल महिला कर्मकरों का 92.0 प्रतिशत योगदान मुख्यतया लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 1.83 लाख(43.5 प्रतिशत), विनिर्माण में 1.40 लाख(33.3 प्रतिशत) व फुटकर व्यापार में 0.64 लाख(15.2 प्रतिशत) रहा, जबकि सबसे कम योगदान निर्माण में 499(0.1 प्रतिशत), विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति में 610 (0.1 प्रतिशत) व खनन तथा उत्खनन में 2521(0.6 प्रतिशत) पाया गया ।

भाड़े पर कार्यरत कुल 1.02 लाख बाल श्रमिकों में से 83.9 प्रतिशत का योगदान मुख्यतः फुटकर व्यापार में 0.4 लाख(39.4 प्रतिशत), विनिर्माण में 0.38 लाख (37.6 प्रतिशत) तथा लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.07 लाख(6.9 प्रतिशत) रहा, जबकि विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति, खनन तथा उत्खनन व डाक एवं संचार में भाड़े पर कार्यरत बाल श्रमिकों का नगण्य योगदान रहा ।

4.6.2 स्वकार्य उद्यमों/संस्थानों में कार्यरत कुल व्यक्तियों एवं महिलाओं का औसत के आधार पर अन्तर्जनपदीय क्षेत्रवार तुलनात्मक विवरण

4.6.2.1 अकृषीय स्वकार्य उद्यमों में ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत कार्यरत कुल 19.68 लाख व्यक्तियों में प्रति सौ उद्यमों पर रोजगार की दृष्टि से जनपद अलीगढ़ प्रथम, वाराणसी द्वितीय व संत रविदास नगर तृतीय स्थान पर रहा, जिनमें क्रमशः 202, 164 व 161 व्यक्ति कार्यरत पाये गये । सबसे कम कर्मकर जनपद जे.पी.नगर, हरदोई व फर्रूखाबाद में क्रमशः 103, 107 व 108 कार्यरत पाये गये । इसी क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की संख्या की दृष्टि से जनपद जे.पी.नगर प्रथम, हाथरस द्वितीय एवं अलीगढ़, कौशाम्बी व वाराणसी तृतीय स्थान पर था, जहां प्रति सौ उद्यमों में क्रमशः 35, 27 एव 25–25 महिला कर्मकर कार्यरत रहीं, जबकि खीरी एवं हरदोई में न्यूनतम 1–1 एवं कन्नौज एवं अम्बेदकर नगर में 2–2 महिलाएं ही कार्यरत पायी गयीं ।

4.6.2.2 नगरीय क्षेत्र में स्थित 11.21 लाख स्वकार्य उद्यमों में प्रति सौ उद्यमों पर रोजगार की दृष्टि से जनपद मऊ, वाराणसी व आजमगढ़ प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा, जहां क्रमशः 209, 181 व 173 व्यक्ति रोजगार में थे, जबकि जनपद जे.पी.नगर, हरदोई, कन्नौज में न्यूनतम 104–104, रामपुर में 106 व सहारनपुर, फर्रूखाबाद व गोरखपुर में 107–107 व्यक्ति कार्यरत पाये

गये । इसके विपरीत कार्यरत महिलाओं की संख्या की दृष्टि से जनपद मऊ, आजमगढ़ व वाराणसी प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहे, जहां प्रति सौ उद्यमों में क्रमशः 57, 29 व 23 महिलायें कार्यरत पायी गयीं, जबकि जनपद अम्बेदकर नगर, बहराइच, बलरामपुर, कुशीनगर, कन्नौज, सहारनपुर, रामपुर, जे.पी.नगर, बुलन्दशहर, मैनपुरी, खीरी, हरदोई, फर्रूखाबाद, औरैया, कानपुर देहात व सोनभद्र में नगण्य महिलाएं कार्यरत पायी गयीं ।

4.6.2.3 प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र(ग्रामीण व नगर) में स्थित कुल 26.26 लाख अकृषीय स्वकार्य उद्यमों में कार्यरत कुल 33.84 लाख व्यक्तियों का प्रति 100 उद्यमों के अन्तर्जनपदीय तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्रदेश में सबसे अधिक रोजगार उपलब्ध कराने वाले प्रथम तीन जनपद क्रमशः मऊ, वाराणसी व अलीगढ़ हैं, जहां क्रमशः 179, 172 व 159 व्यक्ति कार्यरत थे, जबकि जनपद हरदोई, कन्नौज, फर्रूखाबाद, सहारनपुर व रामपुर में न्यूनतम क्रमशः 106, 106, 108, 110 व 110 व्यक्ति ही कार्यरत पाये गये । इसी प्रकार सर्वाधिक महिला कर्मकर जनपद मऊ, वाराणसी, कौशाम्बी व बाराबंकी में क्रमशः 40, 24, 21 व 21 कार्यरत थीं । इसके विपरीत प्रति सौ उद्यमों पर जनपद खीरी व हरदोई में न्यूनतम 1–1 एवं मैनपुरी, फर्रूखाबाद, औरैया, अम्बेदकर नगर व बहराइच में मात्र 2–2 महिला कर्मकर ही कार्यरत पायी गयीं ।

4.6.2.4 अकृषीय संस्थानों में ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत कार्यरत कुल 16.46 लाख व्यक्तियों में प्रति सौ संस्थानों पर रोजगार की दृष्टि से जनपद गौतमबुद्ध नगर प्रथम, बागपत द्वितीय तथा मुजफ्फर नगर तृतीय स्थान पर रहा, जहां क्रमशः 1761, 641 व 518 व्यक्ति कार्यरत थे, जबकि जनपद मुरादाबाद, बांदा एवं श्रावस्ती में न्यूनतम क्रमशः 104, 177 व 229व्यक्ति कार्यरत थे । प्रति सौ संस्थानों में प्रदेश के जनपद बागपत, जौनपुर व मऊ में सर्वाधिक क्रमशः 129, 103 व 95 महिलायें कार्यरत थीं । इसके विपरीत जनपद हरदोई में 3, श्रावस्ती में 18 व खीरी में 20 महिलायें ही कार्यरत पायी गयीं ।

4.6.2.5 नगरीय क्षेत्र में स्थित अकृषीय संस्थानों में कार्यरत 25.94 लाख व्यक्तियों में प्रति सौ संस्थानों पर जनपद गौतमबुद्ध नगर में 1645, सोनभद्र में 773 व सुल्तानपुर में 691 व्यक्ति कार्यरत थे, जो अन्य जनपदों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या की तुलना में सर्वाधिक रहे । जनपद कौशाम्बी, हरदोई व जे.पी.नगर में न्यूनतम व्यक्ति क्रमशः 206, 224 व 225 ही कार्यरत पाये गये । इसी प्रकार जनपद गौतमबुद्ध नगर, मऊ व सुल्तानपुर में सर्वाधिक संख्या में महिलायें क्रमशः 222, 70 व 57 कार्यशील थीं । इसके विपरीत जनपद रामपुर एवं श्रावस्ती में मात्र 1, मुरादाबाद एवं हरदोई में 2 व बिजनौर में 3 महिलायें ही रोजगार में कार्यरत रहीं ।

4.6.2.6 प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र(ग्रामीण एवं नगरीय) में स्थित कुल 11.38 लाख अकृषीय संस्थानों में 42.4 लाख व्यक्ति कार्यरत थे । प्रति सौ संस्थानों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक व्यक्ति जनपद गौतमबुद्ध नगर में 1659, सोनभद्र में 538 व कानपुर नगर में 474 कार्यशील थे । इसके विपरीत बांदा में 227, हरदोई में 228 एवं कौशाम्बी में 245 व्यक्ति कार्यशील पाये गये, जो न्यूनतम रहे । इसी प्रकार प्रति सौ संस्थानों में कार्यरत महिलाओं की संख्या की दृष्टि से जनपद गौतमबुद्ध नगर, मऊ एवं बागपत क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा, जिनमें क्रमशः 203, 79 व 75 महिलाएं कार्यरत थीं । इसके विपरीत जनपद हरदोई में न्यूनतम मात्र 5, रामपुर में 15 व खीरी एवं श्रावस्ती में 17–17 महिलायें कार्यरत पायी गयीं ।(तालिका–एस–5)

4.7 अकृषीय स्वकार्य उद्यमों/संस्थानों का क्षेत्रवार रोजगार आकार वर्गानुसार विवरण

4.7.1 अकृषीय स्वकार्य उद्यमों का रोजगार आकार वर्गानुसार विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल 15.04 लाख उद्यमों में 1–5 व्यक्ति के रोजगार आकार वर्ग में 14. 98 लाख(99.6 प्रतिशत), 6–9 वर्ग में 0.06 लाख(0.4 प्रतिशत) एवं 10 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में 0.003 लाख(0.02 प्रतिशत) उद्यम स्थित थे, जबकि नगरीय क्षेत्र में कुल 11.21 लाख उद्यमों में 1–5 व्यक्ति के रोजगार आकार वर्ग में 11.16 लाख (99.5 प्रतिशत), 6–9 वर्ग में 0.05 लाख(0.4 प्रतिशत) एवं 10 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में 0.002 लाख(0.02 प्रतिशत) उद्यम स्थित थे ।

प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र(ग्रामीण व नगरीय) में स्थित कुल 26.26 लाख उद्यमों में 1–5 व्यक्ति के रोजगार आकार वर्ग में 26.14 लाख(99.5 प्रतिशत), 6–9 वर्ग में 0.11 लाख(0.4 प्रतिशत) एवं 10 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में 0.005 लाख(0.01 प्रतिशत) उद्यम स्थित पाये गये ।

4.7.2 प्रदेश में स्थित अकृषीय संस्थानों का रोजगार आकार वर्गानुसार विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में 1–5 कर्मकर वाले संस्थानों की संख्या 4.27 लाख (90.9 प्रतिशत) थी, जो वर्ष 1998 की तुलना में 10.0 प्रतिशत अधिक रही । इस वर्ग की आन्तरिक विवेचना से यह विदित होता है कि 1–2 कर्मकर वाले संस्थानों की संख्या सर्वाधिक 2.97 लाख(69.5 प्रतिशत) वर्ष 1998 की तुलना में 21.9 प्रतिशत अधिक रही तथा 5 कर्मकरों से युक्त संस्थानों की संख्या वर्ष 1998 की तुलना में 10.0 प्रतिशत की वृद्धि सहित मात्र 0.20 लाख(4.6 प्रतिशत) ही पायी गयी । इस श्रृंखला में यह भी उल्लेखनीय है कि 500 तथा अधिक कर्मकरों से युक्त संस्थानों की संख्या न्यूनतम मात्र 40 पर ही सीमित रह गयी ।

नगरीय क्षेत्र में 1–5 कर्मकर वाले संस्थानों की संख्या 6.06 लाख (90.5 प्रतिशत) पायी गयी, जिसमें वर्ष 1998 से 6.5 प्रतिशत की वृद्धि परिलक्षित हुई । ऐसे संस्थान जिनमें 1–2 कर्मकर कार्यरत थे, की संख्या सर्वाधिक 3.88 लाख(63.9 प्रतिशत) पायी गयी जो वर्ष 1998 की तुलना में 21.0 प्रतिशत अधिक थी । 500 तथा अधिक कर्मकरों से युक्त संस्थानों की संख्या न्यूनतम मात्र 144 पायी गयी ।

प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र (ग्रामीण एवं नगर) में 1–5 कर्मकरों वाले संस्थानों की संख्या वर्ष 1998 की तुलना में 8.4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 10.32 लाख (90.7 प्रतिशत) पायी गयी, जिसके अन्तर्गत सर्वाधिक संस्थान 1–2 कर्मकरों वाले वर्ग में 6.85 लाख(66.4 प्रतिशत) थे, जो वर्ष 1998 की तुलना में 22.3 प्रतिशत अधिक रहे, जबकि 5 कर्मकरों वाले संस्थानों की संख्या वर्ष 1998 की तुलना में 4.8 प्रतिशत बढ़कर न्यूनतम मात्र 0.50 लाख ही पायी गयी । इसके अतिरिक्त 500 तथा अधिक कर्मकरों वाले अकृषीय संस्थानों की संख्या वर्ष 1998 की तुलना में ह्रास के साथ न्यूनतम मात्र 184 ही थी ।

4.8 अकृषीय स्वकार्य उद्यमों/संस्थानों में रोजगार आकार वर्गानुसार व क्षेत्रवार अन्तर्जनपदीय तुलनात्मक विवरण

4.8.1 प्रदेश के विभिन्न जनपदों में स्थित अकृषीय स्वकार्य उद्यमों की रोजगार आकार वर्गानुसार विवेचना से यह विदित है कि 26.26 लाख उद्यमों के अन्तर्गत 33.84 लाख कार्यरत व्यक्तियों में 1–5 व्यक्ति रोजगार आकार वर्ग में सर्वाधिक 77.3 प्रतिशत उद्यम आच्छादित थे, जबकि 6–9 वर्ग में 0.3 प्रतिशत एवं 10 तथा अधिक रोजगार आकार वर्ग में 0.01 प्रतिशत उद्यम स्थित थे । विभिन्न रोजगार आकार वर्ग में स्थित उद्यमों की आन्तरिक विवेचना से ज्ञात होता है कि मात्र एक व्यक्ति द्वारा संचालित कुल 20.93 लाख (79.7 प्रतिशत) उद्यमों में प्रति जनपद उद्यमों की औसत संख्या(29900) से अधिक उद्यमों वाले 30 जनपदों में से सर्वाधिक उद्यम जनपद लखनऊ में 85212(4.1 प्रतिशत), कानपुर नगर में 72339(3.5 प्रतिशत) व गोरखपुर में 64866(3.1 प्रतिशत) स्थित थे, जबकि न्यूनतम उद्यम वाले जनपदों में संत रविदास नगर 7984(0.4 प्रतिशत), श्रावस्ती 8524(0.4 प्रतिशत) व कौशाम्बी 8991(0.4 प्रतिशत) रहे ।(तालिका–1 एवं एस–13)

6–9 व्यक्ति वर्ग में सर्वाधिक उद्यम जनपद वाराणसी में 968(8.8 प्रतिशत), मऊ में 881(8.0 प्रतिशत) व अलीगढ़ में 564(5.1 प्रतिशत) कार्यशील थे, जबकि इस वर्ग में जनपद मैनपुरी, बांदा तथा कन्नौज में उद्यमों की संख्या क्रमशः 4(0.0 प्रतिशत), 14 (0.0 प्रतिशत) एवं 15(0.0 प्रतिशत) रही ।

यह उल्लेखनीय है कि 10 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में सर्वाधिक उद्यम जनपद अलीगढ़ में 60(11.8 प्रतिशत), इलाहाबाद में 28(5.5 प्रतिशत) व सुल्तानपुर में 28 (5.5 प्रतिशत) व संत रविदास नगर में 22(4.3प्रतिशत) पाये गये, जबकि प्रदेश के 40 जनपदों में 10 से कम उद्यम पाये गये तथा 6 जनपदों में इस वर्ग में कोई भी उद्यम क्रियाशील नहीं था ।(तालिका–1 एवं एस–13)

4.8.2 ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल 15.04 लाख उद्यमों में कार्यरत 19.68 लाख व्यक्तियों के रोजगार आकार वर्गानुसार विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 1–5 व्यक्ति रोजगार आकार वर्ग में आच्छादित 14.98 लाख(99.6 प्रतिशत) उद्यमों में प्रति जनपद औसत 21400 से अधिक उद्यम प्रदेश के 27 जनपदों में पाये गये, जिनमें जनपद गाजीपुर 83739(5.6 प्रतिशत) उद्यमों सहित प्रथम, जनपद

जौनपुर 49983(3.3 प्रतिशत) द्वितीय एवं जनपद इलाहाबाद 43068 (2.9 प्रतिशत) तृतीय स्थान पर रहा । इसके विपरीत जनपद बांदा में न्यूनतम मात्र 802 (0.1 प्रतिशत), कन्नौज 5971(0.4 प्रतिशत) तथा संत रविदास नगर में 7055(0.5 प्रतिशत) उद्यम ही कार्यशील पाये गये ।(तालिका–1 एवं एस–13)

6–9 व्यक्ति वर्ग में प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में कुल 6104(0.4 प्रतिशत) उद्यम स्थित थे, जिनमें सर्वाधिक उद्यम जनपद वाराणसी में 439(7.2 प्रतिशत), बरेली में 291 (4.8 प्रतिशत) तथा मुरादाबाद में 285(4.6 प्रतिशत) पाये गये । इसके विपरीत जनपद मैनपुरी, कन्नौज व सोनभद्र में उद्यमों की संख्या नगण्य रही ।(तालिका–एस–13)

10 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में मात्र 335(0.02 प्रतिशत) उद्यम ही क्रियाशील थे, जिसके अन्तर्गत सर्वाधिक उद्यम जनपद सुल्तानपुर 28(8.3 प्रतिशत), संत रविदास नगर 21(6.2 प्रतिशत) व इलाहाबाद में 21(6.2 प्रतिशत) पाये गये । (तालिका–एस–13)

4.8.3 प्रदेश के नगरीय क्षेत्र में 11.21 लाख उद्यम कार्यशील थे, जिनमें संलग्न 14.15 लाख व्यक्तियों के रोजगार आकार वर्गानुसार जनपदीय विश्लेषण से यह विदित होता है कि 1–5 व्यक्ति वर्ग में 11.16 लाख(99.5 प्रतिशत) उद्यमों में प्रदेश में जनपद लखनऊ 77480 (6.9 प्रतिशत) प्रथम, कानपुर नगर 64105(5.7 प्रतिशत) द्वितीय व गाजियाबाद 51882 (4.6 प्रतिशत) तृतीय स्थान पर रहा । इस वर्ग में जनपद श्रावस्ती, कानपुर देहात व बस्ती में उद्यमों की सबसे कम संख्या क्रमशः 2022(0.2 प्रतिशत), 2917(0.3 प्रतिशत), व 3338(0.3 प्रतिशत) रही ।

6–9 व्यक्ति वर्ग में स्थित कुल 4856(0.4 प्रतिशत) उद्यमों में सर्वाधिक उद्यमों सहित जनपद मऊ 694(14.3 प्रतिशत) प्रथम, वाराणसी 528(11.0 प्रतिशत) द्वितीय व अलीगढ़ 297(6.1 प्रतिशत) तृतीय स्थान पर था ।

10 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में कुल 173(0.01 प्रतिशत) उद्यम ही कार्यरत थे । इस वर्ग में स्थित 46(26.5 प्रतिशत) जनपद अलीगढ़ प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहा तथा जनपद जी.बी.नगर 13(7.5 प्रतिशत) व मुरादाबाद 11(6.3 प्रतिशत) क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहा ।(तालिका–एस–13)

4.8.4 प्रदेश के संयुक्त क्षेत्र (ग्रामीण व नगर) में स्थित कुल 11.38 लाख अकृषीय संस्थानों में कार्यरत 42.40 लाख व्यक्तियों के रोजगार आकार वर्गानुसार विश्लेषण से विदित होता है कि 1–5 रोजगार आकार वर्ग में 10.32 लाख(90.7 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत थे, जिनमें प्रति जनपद औसत संख्या 14745 से अधिक पाये गये 20 जनपदों में से कानपुर नगर का स्थान प्रथम रहा, जिसमें 50118(4.9 प्रतिशत) संस्थान थे । इस वर्ग में जनपद लखनऊ 50061(4.8 प्रतिशत) द्वितीय व सहारनपुर 43838(4.2 प्रतिशत) संस्थानों सहित तृतीय स्थान पर रहा । इसके विपरीत जनपद श्रावस्ती में न्यूनतम 1520(0.1 प्रतिशत), कौशाम्बी 1662 (0.2 प्रतिशत) व चित्रकूट 2221(0.2 प्रतिशत) संस्थान पाये गये । यह उल्लेखनीय है कि 500 तथा अधिक व्यक्ति वर्ग में प्रति जनपद संस्थानों की औसत संख्या 3 से अधिक पाये गये 9 जनपदों में सर्वाधिक संस्थान जनपद जी.बी. नगर में 90(2.6 प्रतिशत) थे, जिसमें 69 नगरीय क्षेत्र में व 21 ग्रामीण क्षेत्र में स्थित थे तथा कानपुर नगर में 26 संस्थान कार्यरत पाये गये जो सभी नगरीय क्षेत्रों में ही स्थित थे । इस क्रम में जनपद लखनऊ(16) तृतीय स्थान पर रहा, जिसमें सभी संस्थान नगरीय क्षेत्र में स्थित थे ।(तालिका–1 एवं एस–14)

4.8.5 प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित कुल 4.69 लाख अकृषीय संस्थानों के अन्तर्गत कार्यरत 16. 46 लाख व्यक्तियों के रोजगार आकार वर्गानुसार विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 1–5 रोजगार आकार वर्ग में प्रति जनपद औसत संख्या 6093 से अधिक संस्थान वाले 30 जनपदों में से जनपद मुजफ्फरनगर 18898(4.4 प्रतिशत) प्रथम, हरदोई 16184(3.8 प्रतिशत) द्वितीय व गोरखपुर 15739(3.7 प्रतिशत) तृतीय स्थान पर था । इसके विपरीत न्यूनतम संस्थान जनपद कौशाम्बी 875(0.2 प्रतिशत), श्रावस्ती 1227(0.3 प्रतिशत) तथा जी.बी.नगर 1640 (0.4 प्रतिशत) थे । 500 तथा अधिक रोजगार आकार वर्ग में प्रदेश में कुल 40 संस्थान ही कार्यरत थे, जिनमें से सर्वाधिक संस्थान जनपद जी.बी.नगर में 21(52.5 प्रतिशत), बिजनौर व शाहजहॉपुर 4–4(10.0 प्रतिशत) एवं कानपुर देहात तथा गोण्डा में 2–2 (5.0 प्रतिशत) पाये गये जो क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे । (तालिका–एस–14)

4.8.6 नगरीय क्षेत्र में स्थित कुल 6.69 लाख अकृषीय संस्थानों के अन्तर्गत कार्यरत 25.94 लाख व्यक्तियों की जनपदीय समीक्षा के अन्तर्गत यह तथ्य प्रकाश में आया कि समग्र रूप से प्रति जनपद संस्थानों की औसत संख्या 9553 के सापेक्ष 1–5 रोजगार आकार वर्ग में ही 6.06 लाख(90.5 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत थे, जिनका प्रति जनपद औसत 8652 था । इस वर्ग में औसत से अधिक संस्थान पाये जाने वाले 20 जनपदों में से कानपुर नगर 45016 (7.4 प्रतिशत) संस्थानों सहित प्रदेश में प्रथम, लखनऊ 43578(7.2 प्रतिशत) द्वितीय व जी.बी.नगर 30922(5.1 प्रतिशत) तृतीय स्थान पर रहा । प्रदेश में जनपद बलरामपुर, चित्रकूट व कौशाम्बी का संस्थानों की संख्या की दृष्टि से न्यूनतम स्थान रहा, जिनमें क्रमशः 293, 502 व 786 संस्थान ही पाये गये । 500 तथा अधिक रोजगार आकार वर्ग में प्रदेश के 13 जनपदों में औसत से अधिक संस्थान पाये गये, जिनमें जनपद गौतमबुद्ध नगर 69 (47.9 प्रतिशत) प्रथम, जनपद कानपुर नगर 26(18.0 प्रतिशत) द्वितीय व लखनऊ 16 (11.0 प्रतिशत) तृतीय स्थान पर रहा ।(तालिका–एस–14)

4.9 प्रमुख कार्यकलाप वर्गो में उद्यमों की प्रमुख विशेषताएं एवं स्वामित्व में सामाजिक वर्ग का वितरण

4.9.1 आर्थिक गणना 2005 में अकृषीय स्वकार्य उद्यमों की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि प्रदेश के कुल 26.26 लाख अकृषीय स्वकार्य उद्यमों में मौसमी प्रकृति के 0. 82 लाख(3.1 प्रतिशत), बिना परिसर के 3.62 लाख(13.8 प्रतिशत) एवं शक्ति/ईधन रहित संचालित 21.47 लाख(81.8 प्रतिशत) उद्यम थे । कुल उद्यमों में अनुसूचित जाति द्वारा 2.51 लाख(9.6 प्रतिशत), अनुसूचित जनजाति द्वारा 0.35 लाख (1.3 प्रतिशत) एवं अन्य पिछड़ी जाति द्वारा 14.45 लाख(55.0 प्रतिशत) उद्यम संचालित थे।
(तालिका–1 एवं एस–5)

4.9.2 मौसमी प्रकृति के 0.82 लाख स्वकार्य उद्यमों में 87.0 प्रतिशत उद्यम प्रमुखतया फुटकर व्यापार, विनिर्माण एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में स्थित थे, जिनका योगदान क्रमशः 0.44 लाख (53.7 प्रतिशत), 0.23 लाख(28.0 प्रतिशत) एवं 0.04 लाख(5.5 प्रतिशत) का रहा, जबकि अन्य कार्यकलाप, वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें के क्षेत्र में मौसमी प्रकृति के उद्यमों का योगदान नगण्य रहा ।(तालिका–एस–3)

4.9.3 बिना परिसर के संचालित उद्यमों में सर्वाधिक उद्यम फुटकर व्यापार में 2.27 लाख (62.7 प्रतिशत), विनिर्माण में 0.40 लाख(11.0 प्रतिशत), यातायात एवं भण्डार में 0.30 (8.3 प्रतिशत) तथा लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.24 लाख(6.5 प्रतिशत), संचालित थे, जबकि अन्य कार्य–कलापों में 29, विद्युत गैस व जल आपूर्ति में 169 व लोक प्रशासन व समाजिक सुरक्षा सेक्टर में मात्र 315 उद्यम पाये गये ।(तालिका–एस–3)

4.9.4 शक्ति/ईधन रहित संचालित उद्यमों में सर्वाधिक उद्यम फुटकर व्यापार में 14.36 लाख (66. 8 प्रतिशत) स्थित थे एवं विनिर्माण में 3.26 लाख(15.2 प्रतिशत), लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 1.59 लाख(7.4 प्रतिशत) उद्यम पाये गये । इसके विपरीत विद्यतु गैस तथा जल आपूर्ति में 602, वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें में 3181 तथा अन्य कार्य–कलापों के अन्तर्गत कुल 69 उद्यम पाये गये ।(तालिका–एस–3)

4.9.5 प्रदेश के 2.51 लाख अकृषीय स्वकार्य उद्यम अनुसूचित जाति के स्वामित्व में संचालित थे, जिनमें फुटकर व्यापार में 1.49 लाख(59.3 प्रतिशत), विनिर्माण में 0.51 लाख (20.3 प्रतिशत) एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.20 लाख(8.1 प्रतिशत) उद्यम स्थित थे । इसके विपरीत विद्युत गैस, जल आपूर्ति तथा वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें व अन्य कार्य–कलापों में नगण्य संख्या में उद्यम संचालित पाये गये ।(तालिका–एस–3)

अनुसूचित जनजाति के स्वामित्व में संचालित 0.35 लाख उद्यमों में से फुटकर व्यापार में 0.20 लाख(57.0 प्रतिशत), विनिर्माण में 0.07 लाख(20.0 प्रतिशत) एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.03 लाख(7.7

प्रतिशत) उद्यम स्थित थे, जबकि अन्य कार्य–कलाप, विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति तथा वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवायें में उद्यमों की संख्या नगण्य थी ।

अन्य पिछड़ी जाति के स्वामित्व में संचालित 14.45 लाख उद्यमों में सर्वाधिक उद्यम फुटकर व्यापार में 8.47 लाख(58.6 प्रतिशत), विनिर्माण में 3.31 लाख (22.9 प्रतिशत) एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.90 लाख(6.2 प्रतिशत) स्थित थे, जबकि अन्य कार्य–कलापों में नगण्य संख्या में उद्यम संचालित थे ।

4.9.6 वर्ष 2005 में प्रदेश के कुल 11.38 लाख अकृषीय संस्थानों में मौसमी प्रकृति के 0.38 लाख(3.3 प्रतिशत), बिना परिसर के 0.75लाख(6.6 प्रतिशत) एवं शक्ति/ईधन रहित 8.49 लाख(74.6 प्रतिशत) संस्थान थे । निजी क्षेत्र में 10.20 लाख(89.6 प्रतिशत) तथा सरकारी क्षेत्र में 1.18 लाख(10.4 प्रतिशत) संस्थान स्थित थे । इसके अतिरिक्त कुल संस्थानों में 0.74 लाख(6.5 प्रतिशत) अनुसूचित जाति, 0.13 लाख(1.1 प्रतिशत) अनुसूचित जनजाति एवं 4.76 लाख(41.8 प्रतिशत) एवं अन्य पिछड़ी जाति के स्वामित्व में संचालित थे ।(तालिका–एस–4)

4.9.7 मौसमी प्रकृति के 0.38 लाख संस्थानों में सर्वाधिक संस्थान विनिर्माण में 0.16 लाख (42.1 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 0.13 लाख(34.2 प्रतिशत) व लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.05 लाख (11.9 प्रतिशत) संस्थान थे । इसके विपरीत अन्य कार्यकलाप, खनन तथा उत्खनन एवं विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति वर्ग में नगण्य संख्या में संस्थान स्थित थे ।(तालिका–एस–4)

4.9.8 0.75 लाख संस्थान बिना परिसर के संचालित थे, जिनमें 0.35 लाख(46.6 प्रतिशत) फुटकर व्यापार, 0.17 लाख(22.7 प्रतिशत) विनिर्माण, 0.07 लाख(9.9 प्रतिशत) लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में स्थित थे जबकि अन्य कार्यकलाप एवं विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में नगण्य संख्या में संस्थान पाये गये ।(तालिका–एस–4)

4.9.9 शक्ति/ईंधन रहित संचालित 8.49 लाख संस्थानों में से लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें सेवाएं में 1.69 लाख(19.9 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 4.07 लाख(47.9 प्रतिशत) एवं विनिर्माण में 1.60 लाख(18.8 प्रतिशत) संस्थान स्थित थे, जबकि अन्य कार्यकलाप तथा विद्युत गैस एवं जल आपूर्ति वर्ग में नगण्य संस्थान पाये गये ।

4.9.10 प्रदेश में संचालित 10.2 लाख निजी संस्थानों में सर्वाधिक संस्थान फुटकर व्यापार में 4.61 लाख(45.1 प्रतिशत), विनिर्माण में 2.87 लाख(28.1 प्रतिशत) एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 1.09 लाख(10.7 प्रतिशत) स्थित थे । इसके विपरीत अन्य कार्यकलाप, विद्युत, गैस तथा जल आपूर्ति वर्ग में नगण्य संस्थान पाये गये । सरकारी क्षेत्र के कुल 1.18 लाख संस्थानों में लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.91 लाख(77.1 प्रतिशत), फुटकर व्यापार 11021(9.3 प्रतिशत) एवं वित्त पोषण, बीमा, भू–सम्पत्ति तथा व्यवसायिक सेवाओं में 4365(3.6 प्रतिशत) संस्थान स्थित थे, जबकि खनन तथा उत्खनन एवं निर्माण क्षेत्र में सरकारी संस्थानों की संख्या 280 पायी गयी ।

4.9.11 अनुसूचित जाति के स्वामित्व में संचालित कुल 73530 संस्थानों में से विनिर्माण में 22953(31.2 प्रतिशत), लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 7770(10.6 प्रतिशत) तथा फुटकर व्यापार में 32744 (44.5 प्रतिशत) स्थित पाये गये । इस वर्ग में विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति क्षेत्र में नगण्य संस्थान पाये गये ।

अनुसूचित जनजाति के स्वामित्व में संचालित 12985 संस्थानों में 83.6 प्रतिशत संस्थान प्रमुखतया विनिर्माण, फुटकर व्यापार एवं लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में स्थित थे, जिनका योगदान क्रमशः 27.4 प्रतिशत, 45.0 प्रतिशत एवं 11.9 प्रतिशत रहा । इसके विपरीत विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति, खनन तथा उत्खनन एवं निर्माण क्षेत्र में नगण्य संस्थान पाये गये ।

अन्य पिछड़ी जातियों के स्वामित्व में संचालित 4.76 लाख संस्थानों में फुटकर व्यापार से सम्बन्धित कार्यकलाप का स्थान प्रदेश में प्रथम रहा, जिसमें 209089 (43.9 प्रतिशत)

संस्थान क्रियाशील पाये गये । इसी क्रम में संस्थानों की संख्या की दृष्टि से विनिर्माण व लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें का द्वितीय व तृतीय स्थान रहा, जिनमें क्रमशः 153846(32.3 प्रतिशत) व 42425(8.9 प्रतिशत) संस्थान कार्यरत पाये गये । इस वर्ग में विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में नगण्य संस्थान पाये गये ।

अकृषीय संस्थानों के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अन्य कार्यकलाप वर्ग में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियों के स्वामित्व में 18 संस्थान संचालित थे ।

4.10 प्रमुख उद्योगों में महिलाओं/बाल श्रमिकों का योगदान

4.10.1 प्रदेश के समस्त अकृषीय क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों में कार्यरत 6.99 लाख महिलाओं में से विनिर्माण, लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें एवं फुटकर व्यापार ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इनकी 89.1 प्रतिशत भागीदारी केन्द्रित है । विनिर्माण सम्बन्धी गतिविधियों में 2.74 लाख(39.2 प्रतिशत), लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें 2.02 लाख(28.9 प्रतिशत) तथा फुटकर व्यापार में 1.72 लाख(14.3 प्रतिशत) महिलायें कार्यरत पायी गयी । इसके अतिरिक्त निर्माण, विद्यतु गैस एवं जल आपूर्ति तथा अन्य कार्यकलाप आदि के क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की संख्या नगण्य पायी गयी । यह भी देखने में आया कि जिन औद्योगिक गतिविधियों में महिलाओं का योगदान सर्वाधिक रहा लगभग उन्हीं में बाल श्रमिकों की संख्या भी सर्वाधिक पायी गयी जिसके अनुसार प्रदेश के कुल 1.80 लाख बाल श्रमिकों में से विनिर्माण में 0.74 लाख(41.1 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 0.71 लाख(39.4 प्रतिशत), लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.1 लाख(5.5 प्रतिशत) एवं जलपान गृह तथा होटल में 0.1 लाख(5.5 प्रतिशत) बाल श्रमिक कार्यरत पाये गये । अन्य अवशेष सभी आर्थिक गतिविधियों के अन्तर्गत प्रत्येक क्षेत्र में बाल श्रमिकों का नगण्य योगदान रहा। (तालिका–एस–3 एवं एस–4)

4.11 वित्तीय स्त्रोत के अनुसार उद्योगों का तुलनात्मक विवरण

4.11.1 प्रदेश के कुल 37.63 लाख अकृषीय उद्यमों में सरकारी सहायता प्राप्त 0.87 लाख (2.3 प्रतिशत), संस्थानों से उधार लेने वाले 0.43 लाख(1.1 प्रतिशत), गैर संस्थाओं से उधार लेने वाले 0.13 लाख(0.3 प्रतिशत), स्ववित्त पोषित 36.12 लाख(96.1 प्रतिशत) एवं अन्य वित्तीय स्रोत से सहायता प्राप्त 0.08 लाख(0.2 प्रतिशत) उद्यम संचालित थे ।

4.11.2 सरकारी सहायता प्राप्त 0.87 लाख उद्यमों में 78.1 प्रतिशत उद्यम प्रमुखतः फुटकर व्यापार में 0.17 लाख(19.5 प्रतिशत), विनिर्माण में 0.08 लाख(9.2 प्रतिशत) व लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.52 लाख(59.8 प्रतिशत) संचालित थे, जबकि खनन तथा उत्खनन व निर्माण में नगण्य संख्या में उद्यम पाये गये ।

संस्थाओं से उधार द्वारा संचालित कुल 0.43 लाख अकृषीय उद्यमों में 84.0 प्रतिशत उद्यम मुख्यतः फुटकर व्यापार में 0.2 लाख(46.5 प्रतिशत), विनिर्माण में 0.13 लाख (30.2 प्रतिशत) व लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.03 लाख(7.0 प्रतिशत) संचालित थे, जबकि निर्माण में 96 (0.2 प्रतिशत) व विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में 53(0.1 प्रतिशत) ही उद्यम संचालित पाये गये ।

गैर संस्थाओं से उधार द्वारा संचालित 0.13 लाख अकृषीय उद्यमों में 84.6 प्रतिशत उद्यम मुख्यतः फुटकर व्यापार में 0.07 लाख(53.8 प्रतिशत), विनिमार्ण में 0.03 लाख(23.1 प्रतिशत) व लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.01 लाख(7.7 प्रतिशत) संचालित थे, जबकि खनन तथा उत्खनन व विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में नगण्य उद्यम पाये गये ।

स्ववित्त पोषित कार्यक्रम के अन्तर्गत संचालित 36.12 लाख अकृषीय उद्यमों में 85.7 प्रतिशत उद्यम मुख्यतः फुटकर व्यापार में 19.94 लाख(55.2 प्रतिशत), विनिर्माण में 7.94 लाख(22.0 प्रतिशत) व लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 3.25 लाख(9.0 प्रतिशत) संचालित थे, जबकि खनन तथा उत्खनन व विद्युत गैस तथा जल आपूर्ति में ऐसे उद्यमों की संख्या नगण्य थी ।

अन्य वित्तीय स्रोत से सहायता प्राप्त कुल 0.08 लाख उद्यमों में 75.3 प्रतिशत उद्यम मुख्यतः लोक प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कार्य एवं अन्य सामुदायिक एवं व्यक्तिगत सेवायें में 0.03 लाख(37.5 प्रतिशत), फुटकर व्यापार में 0.02 लाख(25.0 प्रतिशत) व विनिर्माण में 0.01 लाख (12.5 प्रतिशत) संचालित थे, जबकि सबसे कम संख्या में उद्यम निर्माण में 12(0.1 प्रतिशत) व खनन एवं उत्खनन में 15(0.2 प्रतिशत) संचालित थे ।(तालिका–एस–21)